www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **March 2021**

TRANSCRIPT **Approximately 35–45 minutes**

This document has **8** pages.

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * **संवाद 1**

FEMALE: विश्व पुस्तक मेले में आपका स्वागत है। इस वर्ष के पुस्तक मेले के दो मुख्य आकर्षण हैं, गाँधी पंडाल और सूचना प्रौद्योगिकी पंडाल। मेले के बारे में सारी जानकारी मेला गाइड में मौजूद है जिसे आप सूचना केंद्र से ले सकते हैं। लोकप्रिय पंडालों में प्रवेश के लिए आपको कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है ताकि अंदर भीड़ न हो। मेले के द्वार शाम नौ बजे बंद होंगे। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: * **संवाद 2**

FEMALE: महिला: भय्या ज़रा बाल धुलवाने थे!

पुरुष: जी, अपना नाम बताएँगी, आप?

महिला: ओह हो, मैंने बुकिंग तो नहीं कराई है।

पुरुष: माफ़ कीजिए, तब तो आपको इंतज़ार करना पड़ेगा!

महिला: भैय्या, मुझे केवल बाल धुलवाने हैं, बनवाने नहीं हैं।

पुरुष: जी, ज़रूर। लेकिन बुकिंग वालों को मना तो नहीं कर सकते न!

महिला: कितना समय लग सकता है, अंदाज़न?

पुरुष: जी, कह नहीं सकता।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * **संवाद 3**

MALE: भाइयो और बहनो, आपने देखा होगा, पंसारी की दुकान से या सुपरमार्केट से ख़रीदा हुआ शहद कुछ महीनों बाद जमने लगता है। शहद का रंग बदल जाता है। उसमें दाने बनने लगते हैं क्योंकि उसमें मिलावट होती है। एक शीशी का दाम होता है कम से कम सौ रुपए। लेकिन हम आपको दे रहे हैं बाग़ के छत्तों से निकाला हुआ एकदम असली और गुणकारी शहद। ख़राब हो जाए तो दाम वापस और दाम केवल पचास रुपऐं। शुद्धता की पूरी गारंटी है और हमारा पता शीशी पर है। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: * **संवाद 4**

MALE: पुरुषः नमस्ते। आप अकेली हैं या साथ में और लोग भी हैं?

महिलाः जी, तीन लोग और हैं।

पुरुषः पहली मंज़िल पर बैठना चाहेंगी या यहीं नीचे?

महिलाः हं... मौसम अच्छा है। पीछे लॉन में जगह नहीं है क्या?

पुरुषः माफ़ कीजिए वहाँ तो एक पार्टी चल रही है। दो घंटे लगेंगे।

महिलाः ठीक है। तब पहली मंज़िल पर बिठा दीजिए, खिड़की के पास।

पुरुषः मैं देखता हूँ। बस, पाँच मिनट दीजिए।

महिलाः धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: * **संवाद 5**

FEMALE: क्लेयर पॉलोसाक ने शनिवार को ओमान और नामीबिया के बीच वर्ल्ड क्रिकेट लीग के मैच में अंपायर की भूमिका निभाई। जिसके कारण उन्होंने पुरुष एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पहली महिला अधिकारी के तौर पर इतिहास में अपना नाम दर्ज करा दिया। क्लेयर पॉलोसाक इससे पहले आस्ट्रेलिया के एक राष्ट्रीय लीग पुरुष मैच में पहली महिला फ़ील्ड अंपायर बनी थीं। इसके अलावा वे 2018 के टी-20 महिला विश्वकप में भारत और इंगलैंड के सेमीफ़ाइनल मैच में अंपायर की भूमिका निभा चुकी थीं। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

MALE: ***संवाद 6**

FEMALE: महिलाः नमस्ते भाई साहब, बहुत दिनों बाद दिखाई दिए। कहीं गए थे क्या?

पुरुषः हाँ, कुछ दिनों के लिए जयपुर चले गए थे।

महिलाः लेकिन भाभी तो कह रही थी आपने काम छोड़ दिया।

पुरुषः हाँ, मैंने कब कहा कि नहीं छोड़ा? दोस्तों ने बुला लिया था।

महिलाः अच्छा! लेकिन, बेटा अनिल भी तो वहीं रहता है!

पुरुषः नहीं, वह तो रायपुर में है। सलिल वहाँ रहता है।

महिलाः अरे हाँ! ख़ैर, यह बताइए अनिल कब आ रहा है?**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 3 seconds]

www.xtrapapers.com

MALE: **अभ्यास 1 के इन संवादों को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 10 seconds]

MALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

MALE: **तमिल इतिहासकार प्रेमा लक्ष्मणन के साथ मनोरमा के संवाददाता राजन वीरभद्र की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: राजनः * प्रेमा लक्ष्मणन जी, मनोरमा के पाठकों की ओर से आंचलिक यात्रा में आपका स्वागत है।

FEMALE: प्रेमाः धन्यवाद, राजन जी।

राजनः तो कहिए प्रेमा जी, आज आप हमारे पाठकों को किस गाँव की यात्रा पर लेकर चल रही हैं?

प्रेमाः राजन जी, आप विश्वास नहीं करेंगे। पिछले सप्ताह मेरा जाना तमिलनाडु के एक ऐसे गाँव में हुआ जहाँ जूते-चप्पल नहीं पहने जाते। बच्चे-बूढ़े सब नंगे पाँव ही रहते हैं।

राजनः मगर क्यों? लोग पूजा स्थलों में तो आदर-सम्मान के लिए जूते-चप्पल उतार कर जाते हैं। लेकिन पूरे गाँव में नंगे पाँव रहने की क्या वजह हो सकती है?

प्रेमाः नहीं, कुछ लोग कुएँ-बावड़ियों पर और कुछ अपने घरों में भी सफ़ाई रखने के लिए जूते-चप्पल उतार कर जाते हैं। जापान में तो स्वच्छता के लिए जूते-चप्पल घरों से बाहर उतार देने की आम परंपरा है। लेकिन मेरी जानकारी में तमिलनाडु का यह गाँव अकेला ऐसा गाँव है जहाँ लोग पूरे गाँव में नंगे पाँव घूमते हैं। यहाँ रहने वाले अधिकतर लोग आस-पास के धान के खेतों में मज़दूरी करते हैं।

राजनः लेकिन इस गाँव में नंगे पाँव रहने की परंपरा क्यों पड़ी?

प्रेमाः जी। अंडमान गाँव के प्रवेश द्वार के पास एक तालाब है जिसके किनारे एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ है। इसके नीचे एक पुराना ग्रामदेवी का मंदिर है। गाँव में नंगे पाँव रहने की परंपरा इसी देवी के प्रति श्रद्धा के रूप में शुरू हुई।

राजनः पर क्यों? कोई घटना हुई थी क्या?

प्रेमाः जी हाँ। गाँव के बुजुर्गों का कहना है कि मंदिर की स्थापना के समय कोई जूते पहन कर आ गया था और ऐसा बीमार पड़ा कि घबरा कर सारे गाँव वालों ने प्रायश्चित्त के तौर पर मंदिर ही नहीं वरन पूरे गाँव में जूते-चप्पल न पहनने का व्रत लिया। उसके बाद वह व्यक्ति तो ठीक हो गया लेकिन गाँव वालों ने नंगे पाँव रहने की परंपरा जारी रखी। उनका विश्वास है कि देवी गाँव की रक्षा करती है।

राजनः लेकिन लोग जब बाहर से आते हैं तो अपने जूते कहाँ रखते हैं?

www.xtrapapers.com

प्रेमाः कहीं नहीं। बस गाँव में प्रवेश करने से पहले अपने जूते-चप्पल उतार कर या तो हाथों में उठा लेते हैं या फिर थैले में रख लेते हैं। गाँव से बाहर काम पर जाने वाले मज़दूर, पढ़ने जाने वाले बच्चे और कारोबार या नौकरी पर जाने वाले लोग, सभी गाँव से बाहर आकर जूते पहन लेते हैं।

राजनः क्या सभी लोग स्वेच्छा से इस परंपरा का पालन करते हैं? कोई तोड़ने की कोशिश नहीं करता?

प्रेमाः नहीं। यही इस गाँव की सबसे बड़ी विशेषता है कि सभी स्वेच्छा से इस नियम का पालन करते हैं। नंगे पाँव रहना एक आदत बन गई है। किसी को किसी पर निगरानी रखने की ज़रूरत नहीं है।

राजनः और यदि कोई इस नियम को न माने तो?

प्रेमाः तो भी कोई कुछ नहीं कहेगा। क्योंकि यह कोई कठोर धार्मिक नियम नहीं है बल्कि प्यार और सम्मान में रची-बसी एक स्वस्थ परंपरा है। बुज़ुर्गों और बीमार लोगों को तो जूते पहनने की छूट है। लेकिन वे भी नहीं पहनते। इसका एक प्रत्यक्ष लाभ यह है कि गाँव में सफ़ाई रहती है ताकि लोगों के पाँव गंदे न हों। पेड़ लगे हैं ताकि रास्ते धूप में तप कर गर्म न हों।

राजनः प्रेमा जी, तमिलनाडु के इस अनूठे गाँव के बारे में इतनी दिलचस्प जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रेमाः धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8–15**

MALE: **भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर दिनेश सिंघल के साथ विज्ञान पत्रकार नेहा धूलिया की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: नेहाः *प्रोफ़ेसर दिनेश सिंघल, आरोग्य के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

दिनेशः धन्यवाद, नेहा जी।

नेहाः दिनेश जी, भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद के अधिवेशन में यह कहा गया था कि हमारे स्वास्थ्य की देखरेख में किसी नई तकनीक की सहायता से आमूल-चूल परिवर्तन होने वाला है। ज़रा बताएँगे कि किस नई तकनीक की बात हो रही है और वह क्या परिवर्तन लाएगी?

दिनेशः नेहा जी, बीमारियों से निपटने के दो रास्ते हैं। पहला, बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही उसका इलाज किया जाए। दूसरा, बीमारी की संभावना का पता लगाकर उसकी रोकथाम कर ली जाए। अधिकतर बीमारियों का इलाज उनके लक्षण नज़र आने पर किया जाता है। लेकिन कुछ बीमारियाँ घातक होती हैं जिनका इलाज लक्षण नज़र आने से पहले किया जाए तो आसान रहता है। जैसे कैंसर और हृदय रोग। लेकिन लक्षण दिखाई देने से पहले इनकी दस्तक सुन लेना आम चिकित्सक के बस का काम नहीं है। यह काम कंप्यूटरों की कृत्रिम बुद्धि के सहारे किया जा सकता है।

नेहाः लेकिन यह कृत्रिम बुद्धि रोगों की संभावना का पता कैसे लगाती है? कोई उदाहरण देकर समझाइए।

दिनेशः नेहा जी, असल में देखा जाए तो यह कोई नई बात नहीं है। भारत में कई ऐसे वैद्य हुए हैं जो इंसान की नाड़ी की गति और चेहरे के परिवर्तन को पढ़कर बीमारी को पहचान लेते थे और उनकी दवाएँ काम कर जाती थीं। लेकिन यह काम हज़ारों में कोई एक वैद्य कर पाता था। आजकल इसी काम को कंप्यूटर बड़ी आसानी से कर सकते हैं। गूगल कंपनी के एक शोध दल ने कृत्रिम बुद्धि को ऐसा प्रशिक्षण दिया है कि वह लोगों की नाड़ी की गति और आँखों के रेटिना तक ख़ून पहुँचाने वाली बारीक़ नलियों के अंतर को पढ़कर यह बता सकती है कि इंसान को दिल की बीमारी होगी या नहीं।

नेहाः यह तो हैरानी की बात है। क्या कृत्रिम बुद्धि के दिल की बीमारी के पूर्वानुमान सही निकले हैं?

दिनेशः जी हाँ, नब्बे प्रतिशत सही। यही नहीं, एक सीरियाई वैज्ञानिक ने तो एक ऐसी मशीन तैयार की है जो चुंबकीय तरंगों की सहायता से घर में रहने वाले सभी सदस्यों की दिल की धड़कन और नींद जैसी शारीरिक गतिविधियों से लेकर शरीर में आने वाले छोटे से छोटे बदलाव पर नज़र रखती है और इनके सहारे किसी भी तरह की भावी बीमारी के प्रति सावधान करती रहती है।

नेहाः अरे वाह! बच्चों और बुज़ुर्गों के लिए तो यह मशीन बड़े काम की हो सकती है? यह किस-किस तरह की बीमारियों को पकड़ सकती है?

दिनेशः यह शारीरिक के साथ-साथ तनाव और अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों के प्रति भी सचेत कर सकती है। चिकित्सा और कंप्यूटर तकनीक के वैज्ञानिक मिल कर कृत्रिम बुद्धि वाली कुछ ऐसी मशीनें बना रहे हैं जो चिकित्सा के पारंपरिक रूप को बदल रही हैं। जैसे अमरीका के दक्षिणी कैलीफ़ोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने ऐली नाम की आभासी डॉक्टर बनाई है जो चेहरा पढ़ कर मानसिक बीमारी का पता लगा लेती है। एक कंपनी ने फ़ेस2जीन नाम का एक ऐप बनाया है जो चेहरे को पढ़कर आनुवंशिक रोगों की संभावना के बारे में बता सकता है।

नेहाः यानी काफ़ी दिलचस्प काम हो रहे हैं। इनसे हमारे स्वास्थ्य की देखरेख पर क्या असर पड़ेगा?

दिनेशः मुझे लगता है कि आने वाले समय में रोगों का इलाज करने की बजाए उनके कारणों को ख़त्म करना स्वास्थ्य सेवाओं का प्रमुख लक्ष्य बन जाएगा। नए आविष्कारों की राह कठिन ज़रूर होगी लेकिन इसके सहारे लोगों का स्वास्थ्य और बेहतर होगा और पैसा भी कम ख़र्च होगा।

www.xtrapapers.com

नेहाः प्रोफ़ेसर दिनेश सिंघल, स्वास्थ्य की देखरेख में होने जा रहे परिवर्तनों पर रोचक जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

दिनेशः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

FEMALE: यात्रा में सहज संवाद और परिचय के महत्व पर लेखक रासविहारी जोशी के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

* कई लोगों से यह सुना और जाना है कि अमुक बस या रेलगाड़ी के सफ़र में किसी परिवार या व्यक्ति से परिचय हुआ और वह परिचय एक लंबी मैत्री में बदल गया, भले ही 'दोनों पक्ष' अलग-अलग शहरों के हों। और कुछ परिचय ऐसे भी होते हैं, जो किसी लंबी मैत्री में नहीं बदलते, ना ही दोनों पक्ष फिर शायद कभी आपस में मिल पाते हैं, पर जितनी देर साथ रहते हैं, उतनी देर एक सखाभाव जैसा बना रहता है।

कभी-कभी सोचता हूँ, ये जो 'तटस्थ' जगहें होती हैं किसी सड़क-गली, बस-बाज़ार-स्टीमर आदि की, वे भी इस लंबी मैत्री या थोड़ी देर के आत्मीय सखाभाव में अपना योग देती हैं। गुलेरीजी की कहानी 'उसने कहा था' इस संदर्भ में हमेशा याद आती है।

समाज और सामाजिकता का अर्थ यही है कि हम एक सहयोगी की भूमिका में भी रहें। एक-दूसरे के दुख-सुख और दिलचस्पियों को जानें। लेकिन देखता हूँ कि आजकल सहयात्रियों में एक तरह का सशंक भाव जैसा बना रहता है। बातचीत जल्दी से शुरू नहीं होती। शताब्दी या राजधानी एक्सप्रेस में यात्रा करते हुए मैंने पाया है कि अगर मैं कुछ पूछ या बता कर सहयात्री से बातचीत शुरू न करूँ, तो कई घंटे अनबोले ही बीत सकते हैं। हवाई यात्राओं में तो आमतौर पर ऐसा अनबोलापन बना ही रहता है।

बहरहाल, सफ़र के दौरान दो पक्षों का मिलना-जुलना, बतियाना और साथ रहना इस वजह से भी होता है कि सफ़र में आने वाले किसी संकट के समय वे एक-दूसरे के काम आ सकते हैं। दरअसल, यह 'तथ्य' मन-मस्तिष्क की भीतरी तहों में कहीं बसा होता है। जो भी हो, सफ़र के दौरान हुई मैत्रियाँ बड़ी प्रिय और मूल्यवान होती हैं। वे 'सामाजिक-सहयोग' में हमारा भरोसा बढ़ाती हैं। पिछले दिनों भोपाल में मेरे एक प्रियजन यह बता रहे थे कि यूरोप की एक आयोजित यात्रा में उनके साथ कई परिवार थे। शुरू-शुरू के संकोच के बाद वे सब एक-दूसरे से कुछ इतना खुल गए कि लगा सभी वर्षों से परिचित थे। अब उनमें से कई-एक से इ-मेल, फ़ोन और सोशल मीडिया से उनका संपर्क होता रहता है।

www.xtrapapers.com

यह भी तथ्य है कि अपने परिवार के अलावा जो भी रिश्तेदारियाँ बनती हैं, वे आमतौर पर अपरिचितों को ही पास लाकर उनसे परिचय करवाती हैं। अपरिचित ही परिचित बनते हैं। रवींद्रनाथ ठाकुर ने 'गीतांजलि' के एक गीत में लिखा है, 'पहचान मिली अनजानों की, कितनी जगहों पर ठाँव मिली। जो दूर कहीं थे, बंधु बने, जो पर थे, प्रियजन कहलाए'।

सो, आज फिर याद आ रही है सात-आठ वर्ष की उस लड़की की, जो एक बार हमें 'राजधानी एक्सप्रेस' में, दिल्ली से हावड़ा जाते समय मिली थी। वह एक बंगाली माँ और तमिल भाषी पिता की संतान थी। पिता वायु सेना में अफ़सर थे। वह अपनी माँ के साथ कोलकाता जा रही थी, नाना-नानी से मिलने। उससे मेरी बातें कुछ बांग्ला, कुछ हिंदी, कुछ अंग्रेज़ी में भी होती रहीं। उसने न जाने कितनी बातें अपने स्कूल, परिवार और सहेली की मुझे और मेरी पत्नी को बताईं। उसकी माँ, उसकी बातों पर मुसकराती रही। उससे फिर भेंट नहीं हुई। न ही उसकी सारी बातें याद रहीं। ऐसी ही मुलाकातें कुछ धुंधली, कुछ स्पष्ट-सी याद आती रहती हैं। असल में ये मानव-संबंधों में गहराई और प्रीति का भरोसा जगातीं हैं, कभी करुणा का और कभी सहज ही सहयोग और रक्षा का।

जयपुर के एक कलाकार शिविर में भेंट हुई थी ऑक्सफ़ोर्ड की कलाकार हेलेन गैनली से। सामान्य सा परिचय हुआ। लेकिन जब देसी-विदेशी कलाकारों से भरी हुई बस रणथंभौर का अभयारण्य देखने पहुँची तो मैंने पाया कि वे मेरी पत्नी, बेटी वर्षिता और मेरे साथ-साथ चल रही हैं। ख़ूब बातें हो रही हैं। हम साथ-साथ ही पशु-पक्षियों की गतिविधियों पर टिप्पणी कर रहे थे। कोई घंटे भर बाद ऐसा लगा, मानो हम उन्हें वर्षों से जानते हैं। वे मेरी ही उम्र की हैं, सो विनोद पूर्वक बोलीं, 'हम जुड़वाँ हैं, शायद बिछड़ गए थे।' **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 के इन विचारों को अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.